प्रकाशक
की ओर से

इस महीने अमेरिका उस भूमि पर पहली स्थायी इंग्लिश बस्ती की 400वीं वर्षगांठ मना रहा है जो बाद में संयुक्त राज्य अमेरिका का अंग बनी। हमारी आवरण कथा बताती है कि इतने लंबे समय बाद देखे जा रहे किसी भी देश के इतिहास की ही तरह जेम्सटाउन बस्ती की विरासत भी जटिल और अस्पष्ट है। जेम्सटाउन उपनिवेश के नागरिक एक ऐसी प्रतिनिधित्व आधारित लोकतांत्रिक प्रणाली से शासित थे जो अंततः संविधान में निहित हुई। इसके साथ ही वे आज वर्जिनिया कहे जाने वाले प्रांत में मूलवासी इंडियनों से लड़ते और व्यापार भी करते थे। वर्जिनिया के आदि भूस्वामियों के बीच प्रचलित शर्मनाक दास प्रथा का अंत एक रक्तरंजित गृहयुद्ध में हुआ। समकालीन अमेरिकियों के लिए यह सख्त नफरत का मसला है।

लेकिन स्वतंत्रता के पक्ष में खड़े होने वालों की भी कमी नहीं थी। हमें फ्रांसिस सी. असीसी का लेख प्रस्तुत करते हुए गर्व है जिसमें वह बता रहे हैं कि भारत से आए भारतीय अमेरिका की एकदम शुरुआती विरासत का हिस्सा थे। उनमें से कई इस नई दुनिया में नौकरों के तौर पर लाए गए और फिर गिरमिटिए और गुलाम बना लिए गए। हाल ही में खोज निकाले गए ऐतिहासिक दस्तावेज दिखाते हैं कि ये लोग आज़ादी पाने पर तुले थे। वे इसके लिए अदालतों में गए, कई लोग हिम्मत करके निकल भागे। बहुत से लोग अपने प्रयासों में सफल रहे और आज उनके वंशज जातियों, संस्कृतियों और धर्मों के विराट प्याले ''अमेरिकन मेल्टिंग पॉट' का हिस्सा हैं।

हाल ही में अमेरिकन मेल्टिंग पॉट का हिस्सा बने भारतीय पत्रकार और छायाकार सेबास्तियन जॉन इस बार के यात्रा खंड में हमें बस में सफर करते हुए अमेरिका के ओर-छोर घूमते देखे अमेरिकी समाज को एक सूत्र में बांधने वाले मानवीय तत्व के दर्शन करवाते हैं।

परिवारों पर केंद्रित लेख दिखाते हैं कि भारत और अमेरिका में परिवार कैसे बदल रहे हैं और कैसे दोनों देशों में दंपती परिवारिक जीवन और काम को इस तरह संतुलित कर रहे हैं कि वह समाज के लिए हितकारी सिद्ध हो रहा है।

उच्च शिक्षा से संबंधित लेख अमेरिका में अध्ययन करने के इच्छुक लोगों के लिए नुस्खे और उपलब्ध कार्यक्रमों की शृंखला की जानकारी उपलब्ध करवा रहे हैं। निजी और सार्वजनिक विश्वविद्यालयों, दो वर्षीय पाठ्यक्रम चलाने वाले कॉलेजों, एक्रेडिशन प्रणाली आदि पर लेख, वेबसाइटों की उपयोगी सूची, आगामी महीनों में यू.एस. एजुकेशनल फाउंडेशन इन इंडिया (यूसेफी) द्वारा प्रायोजित कार्यक्रमों का कैलेंडर शिक्षा के अवसरों के बारे में बहुत से प्रश्नों के उत्तर दे देंगे।

और पत्रिका के बीच के पन्नों पर समकालीन भारतीय और भारतीय-अमेरिकी कला की प्रर्दशनी देखना न भूलें।